डॉ0 मयानन्द उपाध्याय

विभागाध्यक्ष-शिक्षाशास्त्र विभाग
राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, जौनपुर।

दिनांक 24.12.2007

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री नवीन चन्द्र श्रीवास्तव**, विद्या वारिधि (पी-एच0डी0) अध्येता ने मेरे निर्देशन में **"जौनपुर-जनपद के माध्यमिक स्तर के शैक्षिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन"** नामक विषय पर शोध-प्रबन्ध में तथ्यों का पर्यालोचन नवीन दृष्टि से किया है। प्रस्तुत शोध-कार्य इनके व्यक्तिगत-अनुशीलन एवं परिश्रम पर आधारित है तथा पूर्णतया मौलिक कृति है। जहाँ तक मुझे विदित है कि इस विषय पर अब तक इस तरह का शोध कार्य नहीं हुआ है।

मैं प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को विद्या वारिधि (पी-एच0डी0) उपाधि हेतु सर्वथा उपयुक्त समझता हूँ और इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शोध-निर्देशक

डॉ0 मयानन्द उपाध्याय
(अध्यक्ष)
शिक्षाशास्त्र विभाग
राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, जौनपुर।

अध्यक्ष
शिक्षा... विभाग
राजा ... स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, जौनपुर

राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

अग्रसारण प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नवीन चन्द्र श्रीवास्तव पुत्र श्री सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव ने मेरे निर्देशन में विद्या वारिधि (पी-एच०डी०) उपाधि हेतु अपना शोध-प्रबन्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की परिनियमावली के अन्तर्गत पूर्ण किया है।

इनके शोध-प्रबन्ध का विषय **''जौनपुर-जनपद के माध्यमिक स्तर के शैक्षिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन''** है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध शोधकर्ता के अन्वेषण, सृजनात्मक श्रम एवं अध्ययन का प्रतिफल है। प्रस्तुत प्रबन्ध इनकी मौलिक कृति है।

शोध निर्देशक

डॉ0 मयानन्द उपाध्याय

रीडर, शिक्षाशास्त्र विभाग

राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, जौनपुर

प्राचार्य

24/11/07

डॉ0 जिलेदार मिश्र

राजा श्रीकृष्णदत्त स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, जौनपुर

प्राचार्य

राजा श्रीकृष्ण दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर

प्राक्कथन

सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा का प्रचुर विकास हुआ है। सरकारी अभिलेखों से यह पता चलता है कि पूरे भारत स्तर पर प्राथमिक शिक्षा से लेकर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा में किसी न किसी प्रकार का विकास अवश्य हुआ है। इतना अवश्य है कि कहीं विकास का क्रम कम है तो कहीं सन्तोषजनक। यदि विकास क्रम के कारणों एवं अवरोधों के आकलन की योजना बनायी जाय तो बड़े क्षेत्र के लिए यह बहुत ही दुरूह कार्य होगा। इसलिए यह उचित प्रतीत होता है कि किसी छोटे भौगोलिक क्षेत्र का चयन किया जाय और उस क्षेत्र में शिक्षा के विकास का अध्ययन किया जाय। इस दृष्टि से शोधकर्ता ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद को चुना। इस जनपद को चुने जाने का एक प्रमुख कारण यह है कि यह जनपद ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही चर्चित रहा है और आज भी चर्चा का विषय है। इस जनपद का महत्व मुसलमानी शासनकाल में शर्की बादशाहों द्वारा स्थापित किया गया और उसमें उर्दू और फारसी शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। इसलिए यह उचित समझा गया कि शिक्षा के विकास के क्रम के लिए ऐसा जनपद लिया जाय जिसका शिक्षा के क्षेत्र में अहम भूमिका रही हो।

सन् 1964 में नियुक्त पटेल आयोग के अनुसार जौनपुर हिन्दुस्तान के पिछड़े जिलों में से एक था इसलिए यह भी एक जिज्ञासा का विषय बना कि एक पिछड़े जनपद में शिक्षा के विकास की क्या स्थिति है। इसका अध्ययन किया जाय। इन विचारों के चलते प्रस्तुत शोध के लिए जौनपुर जनपद को चुना गया और शोध का शीर्षक निम्नलिखित रूप में रखा गया।

"जौनपुर–जनपद के माध्यमिक स्तर के शैक्षिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन"।

शिक्षा के विकास के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक होता है। साथ ही राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ शिक्षा के विकास के क्रम को प्रभावित करती हैं। अतएव इस पृष्ठभूमि की समीक्षा की गयी।

भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा समय–समय पर नियुक्त किये गये शिक्षा आयोगों के प्रतिवेदनों तथा समितियों की संस्तुतियों की समीक्षा कर उनके प्रभाव का आकलन किया गया एवं शैक्षिक विकास के अनुरोधी एवं अवरोधी कारणों का आकलन कर प्रासंगिक निष्कर्ष निकाले गये।

यह आशा की जाती है कि प्रस्तुत शोध की विधि एवं निष्कर्ष शिक्षाविदों, विचारकों एवं भावी शोधकर्ताओं को अग्रिम चिन्तन के लिए प्रेरित करेंगे।

प्रस्तुत शोध के पूर्ण करने में जिन विशिष्ट जनों एवं मित्रों से सहायता प्राप्त हुई है एवं प्रेरणा मिली है उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना शोधकर्ता का प्रमुख कर्तव्य है। इस प्रसंग में अपने शोध निर्देशक आदरणीय डॉ0 मयानन्द उपाध्याय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना अपना प्रमुख कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने अपना मूल्यवान समय देकर पग–पग पर मुझे प्रेरित किया एवं शोध की पूर्णता में पर्याप्त योग किये।

डॉ0 समर बहादुर सिंह "(प्रशिक्षण–विभाग) तिलकधारी महाविद्यालय जौनपुर, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी "पूर्व रीडर" प्रशिक्षण विभाग राजा श्रीकृष्णदत्त महाविद्यालय जौनपुर, डॉ0 नरेन्द्र कुमार सिंह (प्रशिक्षण विभाग) राजा हरपाल सिंह सिंगरामऊ, जौनपुर, श्री डॉ0 ओम प्रकाश सिंह (शिक्षाशास्त्र विभाग) तिलकधारी महाविद्यालय जौनपुर एवं अपने विद्यालय के अवकाश प्राप्त डॉ0 मातवर मिश्र जी, डॉ0 वन्दना शुक्ला, डॉ0 श्यामा मौर्या का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने शोध करने के लिए प्रेरित किया एवं अवसर प्रदान किया।

राजा श्रीकृष्णदत्त, महाविद्यालय, जौनपुर (शिक्षाशास्त्र) के आरदणीय प्राध्यापकों एवं तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर के सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिसके आशीर्वाद एवं प्रेरणा से यह कार्य सम्पन्न हो सका। अपने परिवार के श्रेष्ठजनों का मैं चिरऋणी हूँ जिन्होंने इस कार्य के लिए अवसर प्रदान किया।

जौनपुर जनपद के जी0एस0पी0जी0 कालेज समोधपुर, जौनपुर (पूर्व) विशेष केन्द्र निरीक्षक, मा0शि0प0उ0प्र0 डॉ0 सत्यनारायण दूबे ''शरतेन्दु'', श्री त्रिपुरारि भास्कर उप निदेशक (से0नि0) सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, डॉ0 बद्री नारायण तिवारी, मनोविज्ञान विभाग, तिलकधारी महाविद्यालय, डॉ0 रामजी मौर्या प्रबन्धक कौशिल्या महाविद्यालय मड़ियाहूँ जौनपुर, संस्कृत प्रवक्ता डॉ0 विनोद कुमार गुप्त, कौशिल्या महाविद्यालय, डॉ0 विक्रम सिंह, तिलकधारी सिंह महाविद्यालय, डॉ0 मूलचन्द्र मौर्या, प्रबन्धक जागृति इ0कालेज, सिकरारा को साधुवाद प्रदान करना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने शोध के उन्नयन के लिए सुझाव दिये, पुस्तकें प्रदान की, आवश्यकतानुसार अपना बहुमूल्य समय दिया। इसके अतिरिक्त अन्य समस्त हितैषीगण धन्यवादार्ह हैं जिन्होंने शोध प्रबन्ध को समुचित ढंग से पूर्ण करने में योगदान किया।

अन्त में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के टंकणकर्ता श्री आशीष गुप्त को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने शोध–प्रबन्ध का क्रमिक ढंग से संगणक किया।

नवीन चन्द्र श्रीवास्तव

(नवीन चन्द्र श्रीवास्तव)